(IJRSSH) 2013, Vol. No. 3, Issue No. III, Jul-Sep ISSN: 2249-4642

THE LIGHT OF THE LAMP AND THE IMMORTAL DAYANAND

Dr. A. Mukta Vani

Associate Professor, Dept of Sanskrit, Hindi Mahavidyalaya

Hyderabad

दीपज्योति एवं मृत्युंजयी दयानन्द

डॉ. ए. मुक्ता वाणी

असोसिएट प्रोफेसर

हिन्दी महाविद्यालय, हैदराबाद

सजा के दीपों की ज्वाला दयानंन्द ।
सुमेरु यहीं पर कहीं खो गया है ।।

दीपावली पर्व के साथ महर्षि दयानन्द का अटूट सम्बन्ध है । दीपोत्सव जहाँ समस्त पृथ्वी को देदीप्यमान करता है, प्राणिमात्र में उत्साह, उल्लास एवं उमंग को भरता है, वहीं जगदुध्दारक महर्षि दयानन्द का बलिदान नास्तिकता से आस्तिकता की ओर मोड़ते हुए, मानव मन, मस्तिष्क को सत्य, न्याय, धर्म और ज्ञान से प्रदीप्त करता है।

"असतो मा सद्गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय, मृत्योर्मा अमृतंगमय"

- उपनिषद् ।

इन सूक्तियों का अद्भुत संगम महर्षि के जीवन में दृष्टिगोचर होता है। 20 वर्ष की अल्पायु में युवक मूलशंकर ने असत्य से कोसों दूर सत्य ज्ञान को प्राप्त करने की आकांक्षा में लगभग 30 वर्षों तक कठोर तपस्या की। भूख, प्यास, नींद की परवाह न करते हुए, अनेक गुरुचरणों के पास नतमस्तक हो ज्ञान की पिपासा को शान्त करते रहे। अन्त में प्रज्ञाचक्षु, व्याकरण के सूर्य दण्डी गुरु विरजानन्द के चरणों में शिष्यत्व को प्राप्त कर, जिस सत्य ज्ञान को वे प्राप्त किये, उसे आत्मसात् कर गुरु की आज्ञा से गहन अन्धकार रूपी अज्ञान में भटक रही जनता

IJRSSH

को अमृततुल्य प्रकाश की ओर ले गये । प्रायः 8 वर्ष की अल्पावधि में ही इन्होंने इतना विपुल साहित्य समाज को दिया, जितना कम्प्यूटर द्वारा भी सम्भवतः नहीं हो सकता था। उस समय प्रिण्ट मीडिया का भी वर्चस्व नहीं था । शिष्यों से लिखवाकर प्रकाशित करवाना कष्टसाध्य था। वेदों के भाष्य से लेकर व्यवहारभानु तक प्रायः 40 अमूल्य ग्रन्थों की रचना की । मातृभाषा गुजराती तथा अध्ययन का माध्यम संस्कृत होते हुए भी साधारण जनता जिस भाषा को अधिक समझती है, उस भाषा का अवबोध कर आर्यभाषा (हिन्दी) में समस्त साहित्य लिखा। वे जन-जन तक ज्ञानपुंज को पहुंचाना चाहते थे। उनकी तीन कालजयी अमर कृतियाँ ऋवेदादिभाष्यभूमिका, सत्त्वार्थप्रकाश और संस्कारविधि आज भी उतनी ही सामयिक और महत्वपूर्ण है।

19वीं शताब्दी के समाज सुधारकों में अग्रगण्य, वेदोद्धारक महर्षि दयानन्द ने वेदों में कला, विज्ञान और वाणिज्य से सम्बन्धित सभी विषयों का सूक्ष्म विवेचन किया है तथा इसे ऋवेदादिभाष्यभूमिका के माध्यम से प्रमाणोचित प्रस्तुत किया है। जैसे - गणित, नौविमानादि, वैद्यकशास्त्र, तारविद्या, राजप्रजाधर्म, पृथिव्यादिलोकभ्रमण, स्वरव्यवस्था और अलंकार भेद आदि । इन वैज्ञानिक विषयों पर भाष्यकार ऋषि दयानन्द ने मन्त्रों का उद्धरण देते हुए जो भाष्य किया है, उसका अध्ययन कर आधुनिक ढंग से उसपर शोध करने की आज प्रमुख आवश्यकता है।

अमरग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश का उद्देश्य सत्य के अर्थ को प्रकाशित करना है। इस ग्रन्थ को स्वतन्त्रता से पूर्व और पश्चात् अनेकों बार जब्त करने का प्रयास किया गया, लेकिन समय के साथ-साथ इस कृति की माँग और बढ़ती गई। आज विश्व की अनेकों भाषाओं में इस ग्रन्थ का अनुवाद किया गया है। दार्शनिक दयानन्द ने चौदह समुल्लासों (अध्याय) के माध्यम से ईश्वर के सौ नामों की व्याख्या, सन्तान का पालन-पोषण, पठन-पाठन कैसा हो? चतुर्वर्णाश्रम व्यवस्था, राजनीति, ईश्वरोपासना, सृष्टि विषय, भक्ष्याभक्ष्य विषय एवं जीवबन्धन मुक्ति आदि विषयों पर गंभीर चिन्तनपूर्वक प्रकाश डाला है। अन्तिम चार अध्यायों में मत-मतान्तरों में प्रचलित दोषों से बचने का मार्ग सुझाया है।

नाना गृह्यसूत्र एवं धर्मशास्त्रों का अध्ययन करने के पश्चात् मानव जीवन को सुसंस्कृत करने के लिए महर्षि ने संस्कारविधि में 16 संस्कारों की अनिवार्यता को स्पष्ट किया है, जिनके करने से मनुज कुन्दन के सदृश चमकने लगता है।

अपने उत्कृष्ट साहित्य एवं प्रवचनों के माध्यम से विचारक दयानन्द ने स्त्रीविद्या, देशभक्ति, गुरुकुलों की स्थापना, आध्यात्मिकता का शंखनाद तथा स्वतन्त्रता आन्दोलन का सूत्रपात किया। महर्षि के जीवन एवं सुसाहित्य से प्रेरित होकर सरदार भगतसिंह, चन्द्रशेखर आजाद, लालालाजपतराय जैसे अनेकों सेनानी स्वतन्त्रता आन्दोलन में कूद पड़े। आध्यात्मिक क्षेत्र में

श्रद्धेय आनन्दस्वामी, शास्त्रार्थों में पूज्य अमरस्वामी, स्वमी दर्शनानन्द और नारायण स्वामी ने अपना नाम रोशन किया। उपदेशकों में श्री रामचन्द्र देहलवी तथा श्री प्रकाशवीर शास्त्री के भाषणों को सुनने के लिए जनता उमड़ती थी।

सत्य को प्रकट करने से रोकने के लिए प्रभुभक्त महर्षि दयानन्द को अनेकों बार विषपान कराया गया। गालियाँ दी गई। धन का प्रलोभन दिया गया, पर महर्षि ने सदा यही कहा कि "मेरी उँगलियों की मोमबत्ती बनाकर भी क्यों न जला दी जायें तो भी मैं सत्य ही कहूँगा।" इस संदर्भ में कवि ने कहा है-

सत्य से जन्मे हुए तुम, सत्य में लयमान ।

सत्य ही जीवन तुम्हारा, सत्य ही अभियान ।।

तत्कालीन दुष्ट शक्तियाँ जब उनसे पराजित होती रही, तब निराश होकर, संखिया को दूध में मिलाकर पिलाया गया। जिससे देव दयानन्द का शरीर छालों से भर गया। जिसे योग क्रिया के माध्यम से निकालना भी कष्टकर था। महर्षि को आभास हो गया कि अब जीवन के अन्तिम क्षण आ गये हैं। वे ईश्वरोपासना में मग्न हो गये। उनके अन्तिम वचन थे "हे ईश्वर! तूने अच्छी लीला की। तेरी इच्छा पूर्ण हो।" इस घटना को नास्तिक गुरुदत्त बड़ी श्रद्धा से देख रहे थे। वे सोचते हैं कि कोई सत्ता है जो इतनी पीड़ा होते हुए भी स्वामी जी के आत्मबल की वृद्धि करते हुए उनके मुखमण्डल को और अधिक देदीप्यमान कर रहा है, क्योंकि उस समय महर्षि मृत्यु से अमरता की यात्रा में निकल पड़े थे ।

वैचारिक क्रान्ति के अग्रदूत, वेदों के उद्भट विद्वान्, आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द का यह 126वाँ बलिदान दिवस है । वर्तमान में महर्षि के शिष्यों का पवित्र कर्तव्य है कि वसुधैव कुटुम्बकम्, सर्वे भवन्तु सुखिनः जैसे सार्वभौम उद्देश्य के साथ जिस संस्था की स्थापना की गयी थी, ऐसी पुष्पवाटिका को पल्लवित, पुष्पित और विकसित करने में अहर्निश जुटे रहे । समस्त विश्व में इनके सिद्धान्तों का प्रचार, प्रसार करें, जिससे पुनः भारत शान्ति के उत्तुंग शिखरों का आलिंगन कर सके ।

IJRSSH